एशियाड 2014 के लिए खिलाड़ियों का चयन

*494. श्री जनेश्वर मिश्र: क्या युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने एशियाड 2014 को भारत में कराए जाने का प्रस्ताव रखा है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार ने प्रतिस्पर्धी खेलों में सम्मिलित होने और उसके लिए खिलाड़ियों को तैयार करने हेतु क्या योजना बनाई है?

युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री (श्री सुनील दत्त): (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) और (ख) सरकार ने 17वें एशियाई खेल, 2014 की दावेदारी के लिए भारतीय ओलंपिक संघ के प्रस्ताव को "सिद्धांत रूप में" अनुमोदित कर दिया है। तदनुसार, सरकार ने इन खेलों के आयोजन की दावेदारी करने के लिए भारतीय ओलंपिक संघ को पत्र जारी किए हैं। भारतीय ओलंपिक संघ ने सूचित किया है कि उसने "दावा पत्र" भेजा है तथा एशिया ओलंपिक परिषद ने उसकी पावती भेजी है। चीन में सितंबर-अक्तूबर, 2005 में होने वाली एशिया की ओलंपिक परिषद की महासभा में इन खेलों के आबंटन का निर्णय लिया जाएगा।

(ग) एशियाई खेलों सहित प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए खिलाड़ियों की तैयारी/प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रिया है जिसमें खिलाड़ियों के पूर्व प्रदर्शन के मूल्यांकन पर राष्ट्रीय खेल परिसंघों द्वारा दी गई जानकारी, प्राप्ति योग्य लक्ष्य तथा अपेक्षित प्रशिक्षण और प्रदर्शन को ध्यान में रखा जाता है। तदनुसार, उन खेल विधाओं का पता लगाया जाता है जिनमें भारत के अच्छे परिणाम प्राप्त करने की संभावना है तथा उन खेल विधाओं में अधिक ध्यान दिया जाता है। प्रदर्शन के आधार पर चयनित विशिष्ट खिलाड़ियों को वैज्ञानिक ढंग से तैयार किए गए सतत प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से चार वर्षीय "रोल आन प्लान" के तहत कार्यान्वित करने के लिए दीर्घावधिक विकास कार्यक्रम तैयार करके प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सहभागिता के लिए एथलीटों और टीमों के चयन और प्रशिक्षण के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया जाता है। एशियाई खेल, 2014 के लिए खिलाड़ियों के चयन, प्रशिक्षण और सहभागिता की योजना के ब्यौरे एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल और

ओलंपिक खेल तथा एशियाई खेल, 2014 से पहले की अन्य महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उनके प्रदर्शन की समीक्षा पर निर्भर करेगा।

Selection of sports persons for ASIAD-2014

†*494. SHRI JANESHWAR MISHRA: Will the Minister of YOUTH AFFAIRS AND SPORTS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Government have proposed to conduct the ASIAD-2014 in India;

(b) if so, the details thereof; and

(c) the scheme formulated by Government to participate in the competitive events and to prepare the sports persons for the same?

THE MINISTER OF YOUTH AFFAIRS AND SPORTS (SHRI SUNIL DUTT): (a) to (c) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) and (b) Government has approved 'in principle' the proposal of the Indian Olympic Association (IOA) for bidding for the XVII Asian Games, 2014. Accordingly, Government has issued letters to IOA for submitting the bids for holding the Games. IOA has informed that they have submitted the "Letter of Intent" and the same has been acknowledged by Olympic Council of Asia (OCA). The allotment of the Games will be decided at the General Assembly of OCA to be held in China in September-October, 2005.

(c) The preparation/training of sportspersons for major international events including Asian Games is an on-going process which take into account inputs provided by National Sports Federations (NSFs) on the assessment of previous performance by sportspersons, achievable targets and required training and exposures. Accordingly, the disciplines in which India is likely to achieve good results are identified and more concentrated inputs are given to these disciplines. Systematic approach is adopted to select and train athletes and teams for participation in the major international events by drawing Long Term Development Programme (LTDP) to put in action four year roll-on Plan under which elite sportspersons

†Original notice of the question was received in Hindi.

selected on the basis of their performance are put through scientifically designed continuous training programme. The details of the plan for selection, training and participation of the sportspersons in Asian Games, 2014 will depend upon review of the performance in the Asian Games, Commonwealth Games and Olympic Games and other important international events prior to the Asian Games, 2014.

श्री जनेश्वर मिश्र: सभापति महोदय, मैंने मंत्री जी का बयान पढ़ा। अभी पहले जब एक सवाल खेल-कूद के संबंध में पूछा जा रहा था, तब मंत्री जी ने एक दावा पेश किया कि कई खेलों में हमारी टीम के लोग रजत पुरस्कार लेकर आए हैं। यह हमारे लिए बहुत वाह-वाही की बात है कि हम नम्बर दो और नम्बर तीन पर चले जाते हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में यह भी बताया है कि हमारे खिलाड़ियों का चयन कैसे होता है, उसे भी हमने पढ़ा, लेकिन सच यह है कि हमारे जो देशी खेल हैं, उन्हें प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है। वैसे दिया तो क्रिकेट को भी नहीं जाता है, क्योंकि क्रिकेट में पाकिस्तान का राष्ट्रपति जब क्रिकेट देखने आता है तो वह खेलता तो नहीं है, लेकिन उससे खिलाड़ियों को प्रोत्साहन मिलता है। हमारे प्रधान मंत्री या राष्ट्रपति क्रिकेट देखना तो क्या, खेल मंत्री जी ने, एक बार जब टीम हार गई तो कहा कि मैं क्रिकेट देखना ही बंद कर रहा हूं। इन सबसे हमारे खिलाड़ी डीमोरेलाइज़ होते हैं। यह सच है कि राजनीति को खेल में दखल नहीं देना चाहिए, लेकिन राजनीति और सरकार को खेल को प्रोत्साहित अवश्य करना चाहिए। क्या सरकार भविष्य में इस बात का खयाल रखेगी और अपने खिलाड़ियों का चयन करते समय दूसरे देश के खिलाड़ियों के मानदंड के मुताबिक क्या उन्हें इतना तैयार करेगी कि वे गोल्ड मैडल लेकर आएं और उन्हें प्रोत्साहित किया जाए?

श्री सुनील दत्त: मैं आपका बहुत आभार मानता हूं कि आपने खिलाड़ियों के संबंध में कहा, लेकिन आपने फैडरेशन के संबंध में कम कहा है। महोदय, जब से मैं मंत्री बना हूं तब से, मेरा ख़याल है कि प्रदेशों में अगर कहीं भी हमारे जो प्लेयर्स हैं, खिलाड़ी हैं, वे नाम पैदा करते हैं तो सबसे पहले मैं उन्हें टेलिग्राम भेजता हूं और उनसे टेलीफोन पर बात करता हूं। अभी हाल ही में शूटिंग में हमारे 12 खिलाड़ियों को ईनाम दिए गए और आप उनसे पूछ लीजिएगा, मुझे फेडरेशन के जनरल सेक्रेटरी की चिट्ठी आई है, कि वे कितने खुश हुए और उन्होंने कहा कि यह पहले मंत्री हैं जिन्होंने इस प्रकार हमारा ख़याल रखा है। इस तरह उत्साह बढ़ाने के लिए बहुत जरूरी होता है कि ...(व्यवधान)

श्री सभापति: आपका क्या ख़याल है कि पुराने मंत्रियों ने क्या चिट्ठी नहीं लिखी होगी?

श्री सुनील दत्त: यह तो मुझे नहीं मालूम, अगर उस चिट्ठी में ही यह लिखा हुआ है कि आप पहले मंत्री हैं, जिन्होंने ऐसा किया है, इसलिए मैं यह नहीं कहूंगा। उत्साह बढ़ाने के लिए, जहां तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं समझता हूं कि मुल्क़ की ऊंचाई के या तरक्की के दो मापदंड हो सकते हैं, एक तो

आर्थिक तरक्की और दूसरा खेलों के क्षेत्र में तरक्की अर्थात् हम खेलों में कितना आगे बढ़े हैं यदि ये दो चीजें किसी मुल्क के पास होंगी, तो वह मुल्क हमेशा श्रेष्ठ माना जाएगा। और इसलिए मैं समझता हूं कि जो हमारे खिलाड़ी हैं, फेडरेशन हैं उनको भी वैसा ही उत्साह देना चाहिए जैसा कि हमारा मंत्रालय दे रहा है। जो भी उनका पैसा होता है वह सारा हम देते हैं।

श्री जनेश्वर मिश्र: पैसा नहीं, प्रोत्साहन के बारे में बताएं।

श्री सुनील दत्त: हम उनको एप्रिसिएट भी करते हैं, हम मानते हैं उनको तथा गले से लगाते हैं और ऐसा नहीं है कि हम कुछ नहीं करते हैं।

श्री सभापति: वे उनको गले से लगाते हैं, तो उसके बाद आप बताइए कि और क्या करना चाहिए।

श्री जनेश्वर मिश्र: हमने मुशर्रफ साहब की मिसाल दी है। सर, एक सवाल और है कि एशियाड या जो कोई राष्ट्रकुल के खेल या विश्व के खेल होने लगते हैं राजधानी में, तो राजधानी के गरीब लोगों के ऊपर आफत आती है। पिछले एशियाड में जिन मजदूरों ने मजदूरी की थी या जिन लोगों को उनकी जमीन से उजाड़ा गया था तो उन लोगों का आज तक भुगतान नहीं हुआ और वे लोग बेकार घूम रहे हैं। जरूरी है कि वे फिर काम शुरू करेंगे, वे काम के लिए आएंगे और फिर वे दर-दर की ठोकरें खाते रहेंगे। तो जो इस तरह के खेल गांव में लगे रहते हैं किसी खेल की तैयारी के लिए तो क्या खेल मंत्रालय उनको काम की गारंटी देगा?

श्री सुनील दत्त: देखिए, हम तो गारंटी देना चाहते हैं खिलाड़ियों की। जो काम करने वाले हैं अगर वे मुझे कहेंगे कि उनको उसका मुआवजा नहीं मिला है तो मैं कंसर्न्ड आथॉरिटी को जरूर चिट्ठी लिखूंगा और उनके लिए फाइट करूंगा।

डा॰ कर्ण सिंह: सभापति महोदय, एक ऐसा खेल जो भारतवर्ष में आरम्भ हुआ लेकिन उसकी बिल्कुल अवहेलना की जा रही है, वह है शतरंज। खेल में जरूरी नहीं कि जिस्मानी ताकत हो, कुछ दिमाग चलाना पड़ता है और शतरंज में हमने बहुत बढ़िया खिलाड़ी बनाए हैं ग्रांड मास्टर हैं, जूनियर ग्रांड मास्टर हैं। लेकिन शतरंज की ओर न तो किसी का ध्यान जाता है और न किसी को प्रोत्साहित किया जाता है और न उन बच्चों को कोई मदद दी जाती है। तो मैं मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि जहां दूसरे खेलों में हमारी बड़ी दयनीय स्थिति हो गई है, इस एक खेल में हम आगे बढ़ रहे हैं, तो उसको प्रोत्साहन देंगे या नहीं?

श्री सुनील दत्त: सर, मैं बहुत आभार मानता हूं आपका कि आपने एक बहुत ही अच्छा प्रश्न पूछा है। मैं आपको यह बतलाना चाहता हूं कि चैस के ऊपर हमने लोगों की बहुत मदद की है। जहां तक बच्चे चैस खेलते हैं, स्कूलों में खेलते हैं तो उनके पास जाते हैं और उनको भी हम मदद करते

तक बच्चे चैस खेलते हैं, स्कूलों में खेलते हैं तो उनके पास जाते हैं और उनको भी हम मदद करते हैं। अभी आंध्र प्रदेश का एक लड़का चैस प्लेयर है, उसकी हमने मदद की है तथा गेल ने भी उसकी मदद की है। मैंने अपने दफ्तर में उनको चैक दिया है। मैं समझता हूं कि यह बड़ी अच्छी गेम है, मेंटल गेम है। उसके लिए आज बड़ा ही उत्साह पैदा हो गया है जब से इसमें आनन्द वर्ल्ड लेवल के ऊपर गए हैं।

श्री सभापति: आपके ध्यान में है यह खेल?

श्री सुनील दत्त: बहुत ज्यादा, सर।

श्री शाहिद सिद्दिकी: सर, इस देश में जहां 100 करोड़ की आबादी है वहां पर हम अच्छे खिलाड़ी नहीं पैदा कर पाते। मुझे बड़ा दुख यह है कि आज बच्चों के पास खेलने की जगह नहीं रह गई है। दिल्ली, मुम्बई और चेन्नई जैसे शहरों में जितने पार्क भी हुआ करते थे उनको आर्नामेंटल पार्कों में बदल दिया गया है, बच्चों के खेलने की पाबंदी ज्यादातर पार्कों में लगा दी गई है। तो आज शिक्षा ऐसी हो गई है जहां पर बच्चों के लिए शिक्षा के अलावा कुछ भी नहीं होगा और खेलने के लिए पार्क नहीं होंगे, उनके खेलने के लिए कोई जगह नहीं होगी। तो हम अच्छे खिलाड़ी कैसे पैदा करेंगे? तो आपका मंत्रालय खास तौर पर जो शहर हैं उनमें खेल के मैदान और खेल के मैदानों में उन्हें जो फेसिलिटी होनी चाहिए वह देने के लिए क्या कार्यक्रम बना रहे हैं और उनको सुविधा किस तरह से दी जा रही है, यह मैं आपसे जानना चाहता हूं?

†شری شاہد صدیقی ''اتر پردیش'' : سر، اس دیش میں جہاں ۱۰۰ کروڑ کی آبادی ہے وہاں پر ہم اچھے کھلاڑی نہیں پیدا کر پاتے۔ مجھے بڑا دکھ یہ ہے کہ آج بچوں کے پاس کھیلنے کی جگہ نہیں رہ گئی ہے۔ دہلی، ممبئی اور چنئی جیسے شہروں میں جتنے پارک بھی ہوا کرتے تھے ان کو آرنامینٹل پارکوں میں بدل دیا گیا ہے، بچوں کے کھیلنے کی پابندی زیادہ تر پارکوں میں لگا دی گئی ہے۔ تو آج شکشا ایسی ہو گئی ہے جہاں پر بچوں کے لئے شکشا کے علاوہ کچھ بھی نہیں ہوگا اور کھیلنے کے لئے پارک نہیں ہوں گے، ان کے کھیلنے کے لئے کوئی جگہ نہیں ہوگی۔ تو ہم اچھے کھلاڑی کیسے پیدا کریں گے؟ تو آپ کا منترالیہ خاص طور پر جو شہر ہے ان میں کھیل کے میدان اور کھیل کے میدانوں میں انہیں جو فیسلٹی ہونی چاہئے وہ دینے کے لئے کیا پروگرام بنا رہے ہیں اور ان کو سودھا کس طرح سے دی جا رہی ہے، یہ میں آپ سے جاننا چاہتا ہوں؟

श्री सुनील दत्त: सिद्दिकी साहब, मैंने पहले प्रश्न में बताया कि एक्आरण्डी और हमारे मंत्रालय का प्रोग्राम है कि इसकी स्कूलों से शुरूआत की जाए और वहां स्कूल में अभी डिस्ट्रिक्ट लेवल पर

†Transliteration in Urdu Scrip.

हर प्रांत के अपने-अपने गेम होते हैं और अगर वहां प्ले ग्राउंड होंगे और यह एक सब्जेक्ट हो तो वह उसके लिए अच्छा है। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि क्रिकेट के अलावा और कौन सी ऐसी गेम है जहां आपको फुल हाउस मिलता है। हमने कभी यह सोचा है कि क्यों नहीं मिलता।

श्री शाहिद सिद्दिकी: आज बच्चों को खेलने के लिए जगह नहीं है, मैदान नहीं हैं।

†[श्री शाहिद صدیقی "اتر پردیش": آج بچوں کے کھیلنے کے لئے جگہ نہیں ہے، میدان نہیں ہیں۔]

श्री सुनील दत्त: हमें अपनी फैमिली के लैवल पर, अपने बच्चों के लैवल पर देखना चाहिए कि हमारे बच्चे खेलें। अगर हमारे बच्चे खेलेंगे तो हर खेल पापूलर होगा और जहां कोई स्पोर्ट्स होगा, उसके फैन्स होंगे। आज क्रिकेट के अलावा और कोई खेल ही नहीं है...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप बैठिए। Please take your seat. खेल यहां मत करिए।

श्री सुनील दत्त: आज क्रिकेट के अलावा और कोई गेम ही नहीं है। हमें अपना स्पोर्ट्स कल्चर डैवलप करना चाहिए और उसके लिए बहुत जरूरी है कि नैशनल लैवल पर और स्कूल लैवल पर...(व्यवधान)...

श्री सभापति: श्रीमती चन्द्रकला पांडे।

श्रीमती चन्द्रकला पांडे: सभापति महोदय, माननीय मंत्री महोदय से मैं आपके माध्यम से सवाल करना चाहती हूं कि गत वर्ष दिसम्बर के महीने में हम लोगों ने अखबारों में पढ़ा कि एक रोइंग चैम्पियन महिला, जो केरल की थीं, ने आत्महत्या कर ली थी। इस तरह के बहुत सारे खिलाड़ी हैं जिन्होंने भारतवर्ष में अपना नाम रोशन किया लेकिन आज वे बहुत ही आर्थिक विपन्नता की स्थिति में अवसाद का शिकार हो रहे हैं। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगी कि इस तरह के नामजद खिलाड़ियों की आज क्या हालत है, क्या आपने इस तरह का कोई सर्वेक्षण कराया है?

श्री सुनील दत्त: यह बहुत ही अच्छा सवाल माननीय सदस्या ने पूछा है।

श्री सभापति: सब सवाल अच्छे पूछते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री सुनील दत्त: अच्छा जवाब देने वाले से ही अच्छे सवाल पूछे जाते हैं। सर, जब मैंने अखबार में इस बच्ची के बारे में पढ़ा तो आप यकीन मानिए कि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यह क्या हो रहा है? ऐसा क्यों हुआ? मैं सच कह रहा हूं, क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं है कि मैं गलत बात कहूं। सर, हमारे मंत्रालय से जितने भी ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने देश का नाम रोशन किया है, उनको हम पैंशन दे रहे हैं। ऐसा खिलाड़ी, जिसने देश का नाम रोशन किया, अगर वह कहीं नौकरी कर रहा है या पैंशन ले रहा है, तब भी हमारा मंत्रालय उसे पैंशन देगा। इस प्रकार से वह नौकरी भी कर सकता है। इस तरह से हम जितने भी प्लेयर्स हैं, उनका ख्याल रखते हैं।

†Transliteration in Urdu Script

श्रीमती चन्द्रकला पांडे: अगर उनको कोई बीमारी होती है तो उस बीमारी के इलाज के लिए व्यवस्था होनी चाहिए।...(व्यवधान)...

श्री वी॰ हनुमंत राव: मैं मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जब तक बड़े-बड़े ग्राउंड्स नहीं होंगे जो हाई स्कूल्स हैं, इंजीनियरिंग कॉलेज हैं, वे किराए के मकानों में स्कूल चलाते हैं लेकिन प्ले ग्राउंड की ओर कोई तवज्जह नहीं देते हैं — मैं चाहता हूं कि जो लोग स्पोर्ट्स के लिए ग्राउंड की व्यवस्था कर सकते हैं, उन्हीं को परमिशन मिलनी चाहिए। इस तरह से स्पोर्ट्स को चांस मिलेगा। दूसरा, मैं यह कहना चाहता हूं।

श्री सभापति: दूसरा नहीं पूछना है। आप बैठिए। ...(व्यवधान)...

श्री वी॰ हनुमंत राव: Afro-Asian Games में इतने बड़े ग्राउंड्स तैयार करने ...(व्यवधान)..

श्री सभापति: आप बैठ जाइए।...(व्यवधान)...कोई जवाब नहीं आएगा। आप बैठ जाइए।.. (व्यवधान)...कोई जवाब नहीं आएगा। आप बैठिए। प्रश्न संख्या 495।

Withdrawal of Pakistani Troops from Siachen

*495. SHRIMATI SUKHBUNS KAUR : Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether on the eve of the recent visit of Pakistan's President to New Delhi, Pak Foreign Minister again renewed the Pak offer of withdrawal of Pakistani troops from Siachen;

(b) if so, what was Government's reaction and response thereto;

(c) whether it is a fact that while India wants authentication of the maps or the actual ground position line before any pull back, Pakistan wants the pre-1972 troops positions to be recognized;

(d) whether the matter was discussed during the recent Pak President's visit to New Delhi; and

(e) if so, the outcome thereof?

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI K. NATWAR SINGH): (a) to (e) A statement is placed on the Table of the House.